पाठ – 2 जॉर्ज पंचम की नाक

MODULE - 1

लेखक-परिचय

कमलेश्वर का जन्म सन् 1932 में मैनपुरी(उत्तर प्रदेश)में हुआl इलाहबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए. किया l दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर कार्य करने वाले कमलेश्वर ने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया जिसमें सारिका , दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर प्रमुख है l

साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत कमलेश्वर को भारत सरकार ने पद्मभूषण से भी सम्मानित किया l 27 जनवरी 2007

को दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया l

नई कहानी आन्दोलन के अगुआ रहे कमलेश्वर की प्रमुख रचनाएँ हैं – राजा निरबंसियाँ,खोई हुई दिशाएँ , सोलह छतों वाला घर , जिंदा मुर्दे (कहानी-संग्रह) वही बात,आगामी अतीत,डाक बंगला, काली आँधी और कितने पाकिस्तान (उपन्यास) l उन्होंने यात्रा-वृतांत , संस्मरण और आत्मकथा भी लिखी है l कमलेश्वर ने अनेक हिन्दी फिल्मों एवं टी.वी. धारावाहिकों की पटकथाएँ भी लिखी हैं l कमलेश्वर की रचनाओं में तेजी से बदलते समाज का बहुत ही मार्मिक और संवेदनशील चित्रण है l आज की महा-नगरीय सभ्यता में मनुष्य के अकेले हो जाने की व्यथा को उन्होंने बखूबी समझा और व्यक्त किया है l

पाठ – परिचय

हमारे समाज में नाक इज़्ज़त का प्रतीक मानी जाती है l इतना ही नहीं नाक से जुड़े अनेक मुहावरे भी हिन्दी में प्रचलित हैं जिसमें 'नाक कटना' और 'नाक काटना' प्रमुख हैं l इसी मुहावरे के अर्थ का विस्तार करते हुए कमलेश्वर ने **जॉर्ज पंचम की नाक** कहानी में इसका व्यंग्यात्मक उपयोग किया है l सारा व्यंग्य 'नाक' शब्द पर केन्द्रित करते हुए लेखक ने अंग्रेजी हुकूमत से आज़ादी मिलाने के बाद भी सत्ता से जुड़े विभिन्न प्रकार के लोगों की औपनिवेशक दौर की मानसिकता और विदेशी आकर्षण पर गहरी चोट की है l

अपने कथ्य में सफल यह कहानी पत्रकारिता की सार्थकता को तो रेखांकित करती ही है साथ ही व्यवसायिक पत्रकारिता के विरुद्ध भी खड़ी दिखाई देती है l कथाकार के साथ-साथ कमलेश्वर

का सफल पत्रकार का रूप भी यहाँ देखा जा सकता है l

शब्दार्थ

बेसाख्ता – स्वाभाविक रूप से , खामोश – शान्त ,
दास्तान – कहानी , नाजनीन – कोमलांगी , उम्मीद – आशा
लाट – खंभा या मूर्ति , खैरख्वाह – शुभचिंतक , मशवरा – सलाह
हाजिर – उपस्थित , हुक्काम – हुक्म चलने वाले अधिकारी ,
ताका – देखा , खता – भूल या जुर्म , उदासी – सुस्ती ,
दारोमदार – पूरी ज़िम्मेदारी , हताशा – निराशा , लानत – शर्म
इजाजत – आज्ञा , परखा – जाँचा , मुश्किल – कठिनाई
सन्नाटा – बिल्कुल चुप्पी , अचकचाया – चौंका ।

राजेन्द्र प्रसाद
(प्र.स्ना.शिक्षक) हिन्दी,संस्कृत
प. ऊ. के. विद्यालय काकरापार